EDU TERIA
E - D.N.A
Daily Newspaper Analysis
Prelims Mains Essay
Date: 27/11/2025

भारत के लिए ऐतिहासिक क्षण, मिली साल 2030 के राष्ट्रमंडल खेलों की मेजबानी

वर्ष 2010 में दिल्ली में हुआ था आयोजन, इस बार अहमदाबाद में होंगे खेल

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 26 नवंबर।

अहमदाबाद को 2030 राष्ट्रमंडल खेलों का मेजबान चुने जाने की औपचारिक घोषणा बुधवार को ग्लासगो में की गई, जिससे दो दशक बाद भारत में इन खेलों की वापसी होगी। राष्ट्रमंडल खेलों का यह सौवां वर्ष भी होगा। पहली बार ये खेल कनाडा के हैमिल्टन में 1930 में हुए थे। भारत ने 2010 में दिल्ली में खेलों की मेजबानी की थी।

राष्ट्रमंडल खेल बोर्ड ने मूल्यांकन समिति की देखरेख में एक प्रक्रिया पूरी करने के बाद भारत को मेजबानी देने की सिफारिश की थी। इस फैसले से अहमदाबाद में 2036 ओलंपिक खेलों की मेजबानी की भारत की इच्छा को भी बल मिलेगा।

गुजरात के खेलमंत्री हर्ष सांघवी ने आमसभा के बाद कहा कि हम खेलों का विश्व स्तरीय बुनियादी ढांचा तैयार कर रहे हैं, जिसमें सरदार वल्लभ भाई पटेल खेल परिसर और गुजरात पुलिस अकादमी शामिल है। यह ऐसा शहर है, जहां विरासत का आकांक्षाओं से, आस्था का आधुनिकता से और इतिहास का उम्मीद से संगम होता है।

भारत को राष्ट्रमंडल खेलों की मेजबानी सौंपे जाने के दस्तावेज के साथ आइओए की अध्यक्ष पीटी उषा।

राष्ट्रमंडल खेल 2030 की मेजबानी के लिए भारत को नाइजीरिया के शहर अबुजा से कड़ी टक्कर मिल रही थी, लेकिन राष्ट्रमंडल खेल ने 2034 के खेलों की मेजबानी के लिए अफ्रीका के इस शहर के नाम पर विचार करने का फैसला किया। भारत ने 2010 के राष्ट्रमंडल खेलों की मेजबानी पर लगभग 70,000 करोड़ रुपए खर्च किए थे, जो शुरुआती अनुमान 1600 करोड़ रुपए से कहीं अधिक था। इन खेलों में भ्रष्टाचार को लेकर काफी आलोचना हुई थी। पिछले कुछ अर्से में राष्ट्रमंडल खेल प्रासंगिकता बनाए रखने और मेजबान तलाशने के लिए जूझ रहे हैं।

भारतीय राष्ट्रमंडल खेल संघ और भारतीय ओलंपिक

बाकी पेज 8 पर

महिला भागीदारी की राह में बाधाएं

लोकसभा और विधानसभा चुनाव हों या फिर पंचायती संस्थाओं का निर्वाचन, महिलाओं का मत हर जगह खास मायने रखता है। इसके बावजूद प्रतिनिधित्व के मामले में महिलाओं की भूमिका आज भी एक सीमित दायरे में ही सिमटी हुई है।

मोनिका शर्मा

भारतीय राजनीति में महिला मतदाताओं की विशेष भूमिका है। लोकसभा और विधानसभा चुनाव हों या फिर पंचायती प्रतिनिधियों का निर्वाचन, महिलाओं का मत खास मायने रखता है। इसके बावजूद प्रतिनिधित्व के मामले में महिलाओं की भूमिका अपेक्षा के अनुरूप आगे नहीं बढ़ रही है। इस बार बिहार विधानसभा चुनाव में महिलाओं ने जमकर मतदान किया। कई क्षेत्रों में महिलाओं ने पुरुषों की तुलना में अधिक मतदान किया। शहरों से लेकर गांवों-कस्बों तक के मतदान केंद्रों पर महिलाओं की लंबी कतारें एक नागरिक के तौर पर अपने मत का महत्व समझने का द्योतक भी बनीं। महिला मतदाताओं का यह उत्साह अब राजनीतिक समीकरण बनाने और बिगाड़ने वाला बन गया है। व्यापक रूप से देखा जाए, तो महिलाओं की यह भागीदारी शिक्षा, सजगता और सामाजिक तौर पर उनकी भूमिका में आ रहे सकारात्मक बदलावों का परिणाम है।

वास्तव में जीवन की बेहतरी से जुड़ी सरकारी योजनाएं हों या सुरक्षित परिवेश बनाने की कवायद, इनसे महिलाओं का जीवन सबसे अधिक प्रभावित होता है। यही वजह है कि बिहार में वर्ष 2010 के बाद से आधी आबादी ने हर बार बढ़-चढ़कर मतदान किया है। हाल के वर्षों में कमोबेश हर प्रांत में महिला मतदाता चुनाव की धुरी बन गई हैं। मगर सवाल यह है कि जात-पात और मतदान की पारंपरिक लकीर से हटकर अपना मत देने वाली महिलाएं प्रतिनिधित्व के मामले में पीछे क्यों हैं? इस बार के बिहार विधानसभा चुनावों में भी विपक्षी महागठबंधन के कुल उम्मीदवारों में महिलाओं की भागीदारी करीब बारह फीसद ही रही। इनमें राजद ने चौबीस महिलाओं और कांग्रेस ने पांच महिलाओं को उम्मीदवार बनाया। वीआइपी और भाकपा-माले ने एक-एक महिला को टिकट दिया। वहीं, महिला मतदाताओं के बूते प्रचंड बहुमत पाने वाले राजग ने भी दो सौ तैंतालीस में से केवल चौंतीस सीटों पर महिलाओं को प्रत्याशी बनाया। इनमें भाजपा और जद (एकी) ने तेरह-तेरह और लोजपा (राम विलास पासवान) ने पांच महिलाओं को टिकट दिया। वहीं राजग में शामिल दूसरे दलों ने एक-एक महिला को उम्मीदवार बनाया। कुल मिलाकर दस राजनीतिक दलों ने अट्ठासी महिलाओं को ही चुनावी मैदान में उतारा।

गौर करने वाली बात है कि टिकट बंटवारे के मामले में यह असमानता मोटे तौर पर हर दल में और हर चुनाव में देखने को मिलती है। जबकि बीते कुछ वर्षों में मतदान में महिलाओं की सहभागिता बढ़ी है। महिलाएं अब जमीनी मसलों की समझ रखने लगी हैं। सामुदायिक भेद से परे एक मतदाता के रूप में अपने संवैधानिक अधिकार को इस्तेमाल करते हुए उनकी सोच बहुत स्पष्ट रहती है। यही वजह है कि अब आधी आबादी केंद्रित योजनाओं पर विशेष ध्यान भी दिया जाने लगा है। बिहार चुनाव में भी चाहे राजग हो या फिर विपक्षी महागठबंधन, सभी दल इस आधी आबादी की महत्वपूर्ण भूमिका को समझने और सरकार बनाने के वास्ते उनका साथ पाने के लिए प्रयासरत दिखे। इन्हीं कोशिशों के अंतर्गत इस चुनाव में विकास, सुरक्षा, शिक्षा और रोजगार जैसे मुद्दे छाए रहे। समझना मुश्किल नहीं कि ऐसे सभी मुद्दे महिलाओं के व्यक्तिगत, पारिवारिक और सामाजिक जीवन पर गहरा असर डालते हैं। नतीजतन, महिला मतदाताओं के झुकाव को समझने की कवायदें अब केवल राजनीतिक विश्लेषण

का विषय भर नहीं रही हैं। जीवनयापन में सहजता से संबंधित योजनाओं और नीतियों के अलावा सम्मान और सुरक्षा महिलाओं के लिए सबसे अहम मुद्दा बन गया है। महिलाओं में बढ़ती बुनियादी समझ और स्पष्ट सरोकारी भाव के बावजूद उनकी नेतृत्वकारी भूमिका आज भी पीछे क्यों है? इस पर गहराई और व्यापक

> महिलाओं में बढ़ती बुनियादी समझ और स्पष्ट सरोकारी भाव के बावजूद उनकी नेतृत्वकारी भूमिका आज भी पीछे क्यों है? इस पर गहराई और व्यापक रूप से विचार करने की जरूरत है। आम चुनाव से लेकर विधानसभा चुनावों तक, हर बार महिला मतदाताओं की मुखर भूमिका देखने को मिल रही है। महिलाएं वोट बैंक के रूप में सियासी परिवर्तन की वाहक तो बन रही हैं मगर राजनीतिक प्रतिनिधित्व उनके हिस्से कम ही आ रहा है। सियासी दलों में महिला मतदाताओं को लुभाने की होड़ तो बढ़ी है, पर उन्हें प्रत्याशी बनाने के मामले में गंभीरता कहीं नजर नहीं आती है।

रूप से विचार करने की जरूरत है।आम चुनाव से लेकर विधानसभा चुनावों तक, हर बार महिला मतदाताओं की मुखर भूमिका देखने को मिल रही है। महिलाएं वोट बैंक के रूप में सियासी परिवर्तन की वाहक तो बन रही हैं, मगर राजनीतिक प्रतिनिधित्व उनके हिस्से कम ही आ रहा है। अब तक देश में राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री, लोकसभा में विपक्ष की नेता और लोकसभा अध्यक्ष के साथ-साथ अन्य कई महत्वपूर्ण पदों को संभालने के बावजूद राजनीति में महिलाओं की भागीदारी में अपेक्षित सुधार नहीं हुआ है। सियासी जगत में सशक्त और निर्णयकारी भूमिका में महिलाओं की संख्या बहुत सीमित है। महिला मतदाताओं को लुभाने की होड़ तो बढ़ी है, पर उन्हें प्रत्याशी बनाने के मामले में सभी दल कंजूसी दिखाते हैं। जबकि, चुनावों में मतदान का उत्साह और रुझान महिलाओं के दायित्वबोध को साफ दर्शाता है।

दरअसल, राजनीति में महिलाओं की सजग हिस्सेदारी के बावजूद उन्हें प्रतिनिधित्व के उचित अवसर न मिलना हमारे सामाजिक-पारिवारिक और राजनीतिक परिवेश में कायम तयशुदा मानसिकता को सामने रखता है। वर्ष 2020 में किए गए एक सर्वेक्षण में देश की महिलाओं और उनकी राजनीतिक सक्रियता से संबंधित कई पहलुओं पर विचारणीय स्थितियां सामने आई थीं। सर्वेक्षण के अनुसार, महिलाओं की चुनावी भागीदारी में उनकी सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति का विशेष प्रभाव होता है। गौरतलब है कि हमारे यहां राजनीति में उच्च सामाजिक एवं आर्थिक वर्ग की महिलाओं की भागीदारी सामान्य वर्ग से अधिक रही है। सर्वेक्षण में लगभग छियासठ फीसद महिलाओं ने कहा कि उन्हें राजनीतिक निर्णय लेने की स्वायत्तता नहीं है। पारिवारिक मोर्चे पर देखें तो करीब एक-तिहाई महिलाओं का मानना है कि पितृसत्तात्मक समाज उनकी राजनीतिक भागीदारी में बाधा बनता है। तेरह फीसद महिलाओं ने राजनीति में अपनी कम भागीदारी के लिए घरेलू जिम्मेदारियों को बड़ी वजह माना।

शिक्षित एवं सजग महिलाओं के बढ़ते आंकड़ों के बीच यह भी आवश्यक है कि समय के साथ राजनीति में उनकी भागीदारी में बढ़ोतरी होती रहे। न केवल परिवार और सामाजिक परिवेश में महिला नेतृत्व को सहज स्वीकार्यता मिलनी चाहिए, बल्कि तमाम राजनीतिक दलों को भी महिलाओं को अगुआई के अवसर देने के लिए आगे आना होगा। ताकि महिलाओं की भूमिका राजनीतिक दलों की जीत-हार के निर्णायक पक्ष तक ही सीमित न रहे, बल्कि उन्हें नीति निर्माण में भी व्यापक हिस्सेदारी मिले। महिलाओं को सत्ता के गलियारों में पहुंचाकर निर्णयात्मक दायित्व सौंपने से देश की आधी आबादी की मूल समस्याओं के समाधान का मार्ग भी प्रशस्त हो सकता है।

शिक्षा, स्वास्थ्य, सुरक्षा और लैंगिक समानता जैसी समस्याओं को महिलाएं भली-भांति समझ सकती हैं तथा नीतियों और योजनाओं में उनका हल तलाशने के उपाय भी सुझा सकती हैं। यह बात भी महत्वपूर्ण है कि राजनीति में महिलाओं की जमीन पुख्ता करने के लिए हर स्तर पर उनकी सामुदायिक भागीदारी बढ़ाने की जरूरत है। साथ ही समाज की सोच और अपनों के विचारों में साथ देने के भाव को लेकर सकारात्मक बदलाव भी जरूरी है। वर्ष 2023 में बनाए गए 'नारी शक्ति वंदन अधिनियम' को जमीनी स्तर पर प्रभावी तरीके से लागू करने की जरूरत है। इसमें लोकसभा और राज्यों की विधानसभाओं में एक तिहाई सीटें महिलाओं के लिए आरक्षित करने का प्रावधान है। यानी महिलाओं का प्रतिनिधित्व बढ़ाने के लिए सामाजिक-पारिवारिक, आर्थिक और राजनीतिक हर स्तर पर प्रयास किए जाने चाहिए। भावी योजनाओं में आधी आबादी की बेहतरी से जुड़े पक्ष हों या महिला जीवन से संबंधित मुद्दों को प्रमुखता से उठाने का मसला, महिला प्रतिनिधियों की मौजूदगी हर मोर्चे पर बदलाव लाने के लिए आवश्यक है।

चीन पर खत्म करेगा निर्भरता भारत

दुर्लभ खनिज चुंबकों के लिए 7,280 करोड़ की योजना मंजूर

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 26 नवंबर।

केंद्र सरकार ने बुधवार को दुर्लभ खनिज स्थायी चुंबकों के घरेलू विनिर्माण को बढ़ावा देने के लिए 7,280 करोड़ रुपए की योजना को मंजूरी दी। इस कदम से देश की चीन पर निर्भरता को कम करने में मदद मिलेगी। यह खनिज इलेक्ट्रिक वाहन, नवीकरणीय ऊर्जा, इलेक्ट्रानिक्स, वैमानिकी और रक्षा जैसे कई क्षेत्रों के लिए काफी महत्त्वपूर्ण हैं। उधर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि दुर्लभ खनिज स्थायी चुंबकों के विनिर्माण के लिए एक परिवेश स्थापित करने के निर्णय से आयात में कमी आएगी। वहीं केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव ने कहा कि दुर्लभ खनिज चुंबक चीन और जापान समेत उन देशों से मंगाए जा रहे हैं जिनके साथ भारत के समझौते हैं।

इसके अलावा केंद्र सरकार ने गुजरात में द्वारका-कानालुस रेल लाइन के दोहरीकरण, मुंबई महानगर क्षेत्र में बदलापुर व कर्जत के बीच तीसरी एवं चौथी लाइन के निर्माण और 9,858 करोड़ रुपए की लागत से पुणे मेट्रो रेल नेटवर्क के विस्तार को मंजूरी दी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में मंत्रिमंडल की बैठक में 'ठोस दुर्लभ खनिज स्थायी चुंबकों के विनिर्माण की प्रोत्साहन योजना' को स्वीकृति प्रदान की गई।

सूचना एवं प्रसारण मंत्री अश्विनी वैष्णव ने बताया कि यह योजना दुर्लभ खनिज स्थायी चुंबक के विनिर्माण को बढ़ावा देगी। इसका उद्देश्य 6,000 टन प्रति सालाना क्षमता सृजित करना है। यह योजना एकीकृत विनिर्माण सुविधाओं के निर्माण में सहायता करेगी। इसमें दुर्लभ खनिज आक्साइड को धातुओं में, धातुओं को मिश्र धातुओं में और मिश्र धातुओं को तैयार चुंबकों में परिवर्तित करना शामिल है। इस प्रोत्साहन योजना के तहत कुल उत्पादन क्षमता को वैश्विक प्रतिस्पर्धी बोली प्रक्रिया के माध्यम से पांच लाभार्थियों को आवंटित किया जाएगा। प्रत्येक लाभार्थी को अधिकतम 1,200 टन प्रति वर्ष की क्षमता मिलेगी।

मंत्रिमंडल के फैसले

गुजरात में द्वारका-कानालुस रेल लाइन के दोहरीकरण, मुंबई महानगर क्षेत्र में बदलापुर व कर्जत के बीच तीसरी एवं चौथी लाइन के निर्माण और 9,858 करोड़ रुपए की लागत से पुणे मेट्रो रेल नेटवर्क के विस्तार को मंजूरी दी।

इस योजना की अवधि परियोजना आबंटन तिथि से सात वर्ष की होगी। इसमें दो साल का समय दुर्लभ खनिज स्थायी चुंबक के संयंत्र स्थापित करने और अगले पांच वर्ष बिक्री पर प्रोत्साहन देने के लिए निर्धारित किए गए हैं। इस योजना के लिए कुल 7,280 करोड़ रुपए निर्धारित किए गए हैं। इसमें पांच वर्षों के लिए आरईपीएम की बिक्री से संबंधित 6,450 करोड़ रुपए का प्रोत्साहन और 6,000 टन प्रति वर्ष आरईपीएम विनिर्माण सुविधाएं स्थापित करने के लिए 750 करोड़ रुपए की पूंजीगत सब्सिडी शामिल है। प्रत्येक लाभार्थी को 1,200 टन सालाना तक की क्षमता आवंटित की जाएगी। भारत में आरईपीएम की खपत 2025 से 2030 तक दोगुनी होने की संभावना है। वर्तमान में, भारत में इन वस्तुओं की मांग मुख्य रूप से चीन सहित अन्य देशों से आयात के माध्यम से पूरी होती है। आधिकारिक बयान में कहा गया कि इस पहल के साथ, भारत अपनी पहली एकीकृत आरईपीएम विनिर्माण सुविधाएं स्थापित करेगा, जिससे रोजगार सृजन होगा और इस क्षेत्र में देश आत्मनिर्भर बनेगा।

सीईईडब्लू के स्वतंत्र अध्ययन में अनुमान लगाया | संभावना | भारत की हरित अर्थव्यवस्था 3,65,820 अरब रुपए का निवेश

वर्ष 2047 तक 4.8 करोड़ नौकरियां सृजित होंगी

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 26 नवंबर।

भारत 2047 तक संचयी रूप से 4,100 अरब डालर (3,65,820 अरब रुपए) का हरित निवेश आकर्षित कर सकता है और इससे 4.8 करोड़ नौकरियों के बराबर पूर्णकालिक अवसर (एफटीई) सृजित होने की संभावना है। ऊर्जा, पर्यावरण और जल परिषद (सीईईडब्लू) के एक स्वतंत्र अध्ययन में यह अनुमान लगाया गया।

अध्ययन में यह भी अनुमान लगाया गया है कि इसी अवधि तक भारत 1,100 अरब डालर (98,146 अरब रुपए) के वार्षिक हरित बाजार का भी उपयोग कर सकता है। देश के पहले इस तरह के राष्ट्रीय मूल्यांकन में ऊर्जा परिवर्तन, संसाधनों का महत्तम उपयोग करने वाली अर्थव्यवस्था, जैव-अर्थव्यवस्था तथा प्रकृति-आधारित समाधान जैसे क्षेत्रों में 36 हरित मूल्य शृंखलाओं की पहचान की गई है, जो मिलकर 'विकसित भारत' की दिशा में एक निर्णायक हरित वित्तीय अवसर प्रस्तुत करती हैं। अक्सर हरित अर्थव्यवस्था को सिर्फ सौर पैनल और इलेक्ट्रिक वाहन तक सीमित समझा जाता है, लेकिन अध्ययन के मुताबिक इसका दायरा बहुत व्यापक है। इसमें जैव-आधारित सामग्री, कृषि-वानिकी, हरित निर्माण, सतत पर्यटन, विनिर्माण, कचरे से मूल्य सृजन उद्योग और प्रकृति-आधारित आजीविका जैसे क्षेत्र शामिल हैं। ये सभी अगले दो दशक में अरबों डालर के क्षेत्र बन सकते हैं। सीईईडब्लू की रपट में कहा गया है कि केवल ऊर्जा रूपांतरण क्षेत्र ही 1.66 करोड़ नौकरियां पैदा कर सकता है और 37.9 अरब डालर का निवेश आकर्षित कर सकता है।

अध्ययन में यह भी अनुमान लगाया गया है कि इसी अवधि तक भारत 1,100 अरब डालर (98,146 अरब रुपए) के वार्षिक हरित बाजार का भी उपयोग कर सकता है। देश के पहले इस तरह के राष्ट्रीय मूल्यांकन में ऊर्जा परिवर्तन, संसाधनों का महत्तम उपयोग करने वाली अर्थव्यवस्था, जैव-अर्थव्यवस्था तथा प्रकृति-आधारित समाधान जैसे क्षेत्रों में 36 हरित मूल्य शृंखलाओं की पहचान की गई है, जो मिलकर 'विकसित भारत' की दिशा में एक निर्णायक हरित आर्थिक अवसर प्रस्तुत करती हैं।

इसमें नवीकरणीय ऊर्जा, भंडारण, वितरित ऊर्जा और स्वच्छ परिवहन शामिल हैं। रपट जारी करने के अवसर पर पूर्व जी20 शेरपा, नीति आयोग के पूर्व सीईओ और जीईसी के अध्यक्ष अमिताभ कांत ने कहा कि जिस तरह से भारत तीन ट्रिलियन डालर की अर्थव्यवस्था से आगे बढ़ रहा है, हम पश्चिम के विकास माडल का अनुसरण नहीं कर सकते हैं। हमारे अधिकांश बुनियादी ढांचे का निर्माण अभी बाकी है, इसलिए हमारे पास शहरों, उद्योगों और आपूर्ति शृंखलाओं को सर्कुलैरिटी, स्वच्छ ऊर्जा और बायोइकोनामी के आस-पास निर्माण करने का एक अनूठा अवसर मौजूद है। जिस तरह डिजिटल सार्वजनिक बुनियादी ढांचे ने भारत को तकनीकी रूप से आगे बढ़ने में सक्षम बनाया है, – सात वर्षों में वह हासिल किया जो दशकों में हो पाता – हमें अब हरित अर्थव्यवस्था में एक छलांग लगानी चाहिए। जहां दुनिया का अधिकांश हिस्सा पुरानी प्रणालियों में फंसा हुआ है, सर्कुलर और संसाधन-कुशल मूल्य शृंखला पर निर्मित एक विकसित भारत एक नये विकास मार्ग को परिभाषित कर सकता है और हरित विकास के लिए एक वैश्विक बेंचमार्क स्थापित कर सकता है।

26/11 की बरसी पर अमित शाह ने कहा

पूरे विश्व ने भारत के आतंकरोधी अभियानों को सराहा

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 26 नवंबर।

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने बुधवार को कहा कि मोदी सरकार की आतंकवाद को बिल्कुल न बर्दाश्त करने (जीरो-टालरेंस) की नीति स्पष्ट है और पूरा विश्व भारत के आतंकवाद रोधी अभियानों को सराह रहा है तथा उसे व्यापक समर्थन दे रहा है।

मुंबई में 26/11 के आतंकवादी हमलों के दौरान अपने प्राणों की आहुति देने वाले जवानों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए शाह ने 'एक्स' पर एक पोस्ट में कहा कि आतंकवाद किसी एक देश के लिए नहीं, बल्कि पूरी मानव जाति के लिए बहुत बड़ा अभिशाप है। गृह मंत्री ने कहा, 'वर्ष 2008 में आज ही के दिन आतंकियों ने मुंबई पर कायराना हमला कर वीभत्स और अमानवीय कृत्य किया था।' उन्होंने कहा, 'मुंबई आतंकी हमलों का डटकर सामना करते हुए अपना बलिदान देने वाले वीर जवानों को नमन करता हूं और इस कायराना हमले में अपनी जान गंवाने वाले सभी लोगों को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।' शाह ने कहा, 'मोदी सरकार की आतंक के खिलाफ जीरो टालरेंस की नीति स्पष्ट है, जिसे पूरा विश्व सराह रहा है और भारत के आतंकवाद विरोधी अभियानों को व्यापक समर्थन दे रहा है।' गौरतलब है कि 26 नवंबर 2008 को लश्कर-ए-तैयबा के 10 आतंकवादी समुद्र के रास्ते मुंबई पहुंचे और 60 घंटे तक मुंबई को बंधक बनाने के दौरान उन्होंने 18 सुरक्षाकर्मियों सहित 166 लोगों की हत्या कर दी।

मुंबई में 26/11 के आतंकवादी हमलों के दौरान अपने प्राणों की आहुति देने वाले जवानों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए शाह ने 'एक्स' पर एक पोस्ट में कहा कि आतंकवाद किसी एक देश के लिए नहीं, बल्कि पूरी मानव जाति के लिए बहुत बड़ा अभिशाप है। गृह मंत्री ने कहा, 'वर्ष 2008 में आज ही के दिन आतंकियों ने मुंबई पर कायराना हमला कर वीभत्स और अमानवीय कृत्य किया था।'

आतंकवाद के सभी रूपों से लड़ने की प्रतिबद्धता दोहराएं : मुर्मू

नई दिल्ली, 26 नवंबर (ब्यूरो)।

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने मुंबई में 26/11 के आतंकवादी हमलों के दौरान देश की रक्षा करते हुए प्राण न्योछावर करने वाले वीर जवानों को श्रद्धांजलि दी और सभी से आतंकवाद के हर रूप से मुकाबला करने की अपनी प्रतिबद्धता को दोहराने का आह्वान किया।

मुर्मू ने 'एक्स' पर कहा राष्ट्र उनके सर्वोच्च बलिदान को कृतज्ञता के साथ याद करता है। आइए, हम आतंकवाद के सभी रूपों से मुकाबला करने की प्रतिबद्धता को दोहराएं। एक मजबूत और समृद्ध भारत के निर्माण के संकल्प के साथ हम सब विकास के मार्ग पर साथ आगे बढ़ें।'

यूक्रेन व रूस को लेकर राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कहा

युद्ध समाप्त कराने की योजना तैयार

वाशिंगटन, 26 नवंबर (एपी)।

अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने मंगलवार को कहा कि यूक्रेन और रूस के बीच युद्ध समाप्त कराने की उनकी योजना तैयार है और वह अपने दूत स्टीव विटकाफ को रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन से तथा सेना सचिव डैन ड्रिस्काल को यूक्रेनी अधिकारियों से बातचीत के लिए भेज रहे हैं।

ट्रंप ने संकेत दिया कि वह भी पुतिन और यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमीर जेलेंस्की से मुलाकात कर सकते हैं, लेकिन वार्ता में पर्याप्त प्रगति होने पर। उन्होंने कहा कि वह उपराष्ट्रपति जेडी वेंस, विदेश मंत्री मार्को रुबियो, युद्ध मंत्री पीट हेगसेथ और अमेरिकी राष्ट्रपति के आधिकारिक आवास एवं कार्यालय वाइट हाउस की चीफ आफ स्टाफ सूजी वाइल्स के साथ प्रगति की जानकारी लेंगे। ट्रंप की यह टिप्पणी तब आई जब सेना सचिव ड्रिस्काल ने सोमवार देर रात और मंगलवार को अबू धाबी में रूसी अधिकारियों से बातचीत की। सेना सचिव के प्रवक्ता लेफ्टिनेंट कर्नल जेफ टोलबर्ट ने कहा, 'वार्ता सकारात्मक दिशा में आगे बढ़ रही है और हम आशावादी बने हुए हैं।'

क्रेमलिन ने अमेरिकी दूत की यात्रा की पुष्टि की

कीव, 26 नवंबर (एपी)।

क्रेमलिन के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बुधवार को पुष्टि की कि अमेरिका के विशेष दूत स्टीव विटकाफ अगले सप्ताह मास्को का दौरा करेंगे, क्योंकि रूस और यूक्रेन के चल रहे युद्ध को समाप्त करने के लिए आम सहमति बनाने के प्रयास तेज हो गए हैं।

रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के विदेश मामलों के सलाहकार यूरी उशाकोव ने कहा कि क्रेमलिन के अधिकारियों ने अभी तक अमेरिका का शांति प्रस्ताव नहीं देखा है।

पाकिस्तान 1947 से भारत के खिलाफ आतंकवाद का कर रहा इस्तेमाल

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 26 नवंबर।

मुंबई आतंकवादी हमले की 17वीं बरसी के अवसर पर बुधवार को विचारक संस्था 'नैटस्ट्रैट' द्वारा 1947 से 2025 के बीच सीमा पार से किए गए प्रमुख आतंकवादी हमलों का विवरण देने वाला एक दस्तावेज जारी किया गया। सामरिक और सुरक्षा मुद्दों पर शोध के लिए एक स्वतंत्र, गैर-लाभकारी संस्था 'नैटस्ट्रैट' द्वारा संकलित रपट में कहा गया है, 'भारत के खिलाफ पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद के इतिहास को बार-बार बताया जाना चाहिए।'

वर्ष 1947 से शुरू होकर वर्तमान तक के रेकार्ड पाकिस्तान की सेना और खुफिया इकाई 'इंटर सर्विसेज इंटेलिजेंस' (आइएसआइ) द्वारा भारत के खिलाफ आतंकवाद को 'सरकारी नीति' के रूप में इस्तेमाल करने की एक सतत रणनीति का संकेत देते हैं।

'भारत पर पाकिस्तानी आतंकवादी हमले का कालक्रम 1947-2025' शीर्षक वाली रपट के अनुसार, पाकिस्तान की ओर से होने वाली आतंकवादी गतिविधियों को पांच भागों में विभाजित किया जा सकता है - 1947-71 आधारभूत संघर्षों के युग के रूप में 1972-89 छद्म युद्ध के उदय के रूप में, 1990-2000 उग्र और शहरी हमलों के रूप में, 2001-09 राष्ट्रीय प्रतीकों को निशाना बनाने के रूप में और 2010-25 आतंकवाद के बदलते स्वरूप और कठोर प्रतिक्रिया के रूप में। लगभग चार दशकों का अनुभव रखने वाले पूर्व राजनयिक पंकज सरन वर्तमान में दिल्ली स्थित 'नैटस्ट्रैट' के संयोजक हैं।

रपट में पाकिस्तान या उसके नियंत्रण वाले क्षेत्रों से होने वाली महत्त्वपूर्ण आक्रामक गतिविधियों और आतंकवाद से संबंधित गतिविधियों का विवरण दिया गया है। साथ ही ऐसे हमलों का सामना करने में भारत की उल्लेखनीय दृढ़ता को भी पेश किया गया है। रपट में कहा गया है, 'ये कृत्य एक राष्ट्र के रूप में भारत की प्रगति को नहीं रोक सके हैं। इसके बजाय, भारतीय समाज और राजनीति ने देश को विभाजित करने या इसकी प्रगति को धीमा करने के प्रयासों को कमजोर किया है।'

वहीं भारत लगातार आरोप लगाता रहा है कि पाकिस्तान की सैन्य और खुफिया एजेंसियां, विशेषकर इंटर-सर्विसेज इंटेलिजेंस (आइएसआइ), भारत में अस्थिरता पैदा करने के लिए आतंकवादी समूहों को समर्थन, प्रशिक्षण और वित्तपोषण करती हैं। ऐसे में मुंबई 2008 हमला, पठानकोट 2016 हमला, और पुलवामा 2019 हमला जैसे कई बड़े आतंकवादी हमलों के तार पाकिस्तान स्थित आतंकी संगठनों, जैसे लश्कर-ए-तैयबा और जैश-ए-मोहम्मद, से जुड़े हुए पाए गए हैं।

रपट में कहा गया है कि वर्ष 1947 से शुरू होकर वर्तमान तक के रेकार्ड पाकिस्तान की सेना और खुफिया इकाई 'इंटर सर्विसेज इंटेलिजेंस' (आइएसआइ) द्वारा भारत के खिलाफ आतंकवाद को 'सरकारी नीति' के रूप में इस्तेमाल करने की एक सतत रणनीति का संकेत देते हैं।

रपट में पाकिस्तान या उसके नियंत्रण वाले क्षेत्रों से होने वाली महत्त्वपूर्ण आक्रामक गतिविधियों और आतंकवाद से संबंधित गतिविधियों का विवरण दिया गया है। साथ ही ऐसे हमलों का सामना करने में भारत की उल्लेखनीय दृढ़ता को भी पेश किया गया है।

दक्षिण अफ्रीका ने 25 साल बाद भारत में 2-0 से शृंखला जीती

गुवाहाटी, 26 नवंबर (भाषा)।

आफ स्पिनर साइमन हार्मर ने कौशल और दृढ़ संकल्प की कमी वाले भारतीय बल्लेबाजों को फिर से दिन में तारे दिखाए, जिससे दक्षिण अफ्रीका ने दूसरे और अंतिम टेस्ट मैच में 408 रन की रेकार्ड जीत दर्ज करके दो मैच की शृंखला में 2-0 से क्लीन स्वीप किया। यह हार भारत के टेस्ट इतिहास में एक और शर्मनाक अध्याय है क्योंकि रन के लिहाज से यह उसकी सबसे बड़ी हार है। यह तीसरा अवसर है जब किसी टीम ने भारत का उसकी धरती पर सूपड़ा साफ किया। इससे पहले दक्षिण अफ्रीका ने 2000 में 2-0 से, पिछले साल न्यूजीलैंड ने 3-0 से शृंखला जीती थी।

भारत के सामने 549 रन का असंभव लक्ष्य था और उसकी पूरी टीम मैच के पांचवें और अंतिम दिन 140 रन पर आउट हो गई। दक्षिण अफ्रीका ने अपनी पहली पारी में 489 रन बनाए थे जिसके जवाब में भारतीय टीम 201 रन पर आल आउट हो गई थी। दक्षिण अफ्रीका ने अपनी दूसरी पारी पांच विकेट पर 260 रन पर घोषित की थी। मुख्य कोच गौतम गंभीर के नेतृत्व में, भारत अब तक घरेलू मैदान पर न्यूजीलैंड और दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ पांच टेस्ट हार चुका है। पिछले 66 वर्षों में यह पहला अवसर है जबकि भारतीय टीम सात महीनों के अंतराल में पांच टेस्ट हार गई। भारत की तरफ से रवींद्र जडेजा ही कुछ संघर्ष कर पाए। उन्होंने 87 गेंदों में 54 रन बनाए।

हार्मर ने पिच से मिल रहे उछाल और टर्न का पूरा फायदा उठाकर अपने करिअर का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए 37 रन देकर छह विकेट तथा मैच में कुल नौ विकेट लिए। एडेन मार्क्रम ने नौ कैच लेकर एक टेस्ट मैच में सर्वाधिक कैच का रेकार्ड बनाया। उन्होंने भारत के अजिंक्य रहाणे के 2015 में लिए गए आठ कैच के रेकार्ड को पीछे छोड़ा। भारत ने सुबह दो विकेट पर 27 रन से अपनी पारी आगे बढ़ाई जिसके बाद हार्मर ने अपने टर्न और उछाल से भारतीय बल्लेबाजों को परेशान किया। उन्होंने पहले सत्र में नाइटवाचमैन कुलदीप यादव (05), ध्रुव जुरेल (02) और कप्तान ऋषभ पंत (13) को पवेलियन की राह दिखाई।

बारसापारा की पिच हाल के समय में उपलब्ध कराई गई सर्वश्रेष्ठ भारतीय पिचों में से एक थी, जिसमें उचित तकनीक और अभ्यास से बल्लेबाज रन बनाने में सक्षम थे। इस पिच पर अपनी लेंथ को जानने वाले तेज गेंदबाजों ने अच्छा प्रदर्शन किया और चालाक स्पिनरों ने दबदबा बनाया।

दूसरा टेस्ट मैच

ट्राफी के साथ दक्षिण अफ्रीका की टीम।

हार के बाद डब्लूटीसी तालिका में पांचवें स्थान पर खिसका भारत

नई दिल्ली, 26 नवंबर (भाषा)। दक्षिण अफ्रीका से दोनों टेस्ट मैच में हार झेलने के बाद भारत विश्व टेस्ट चैंपियनशिप (डब्लूटीसी) तालिका में पांचवें स्थान पर खिसक गया, जिससे उसकी फाइनल में पहुंचने की संभावनाओं को करारा झटका लगा है।

इस साल के शुरू में इंग्लैंड में शृंखला बराबर करने वाली भारतीय टीम दक्षिण अफ्रीका से मिली हार के बाद पाकिस्तान से नीचे पांचवें स्थान पर खिसक गई है और उसका पीसीटी (फीसद) 48.15 पर आ गया है। भारत ने मौजूदा विश्व टेस्ट चैंपियनशिप चक्र में नौ टेस्ट मैच खेले हैं, जिनमें से चार जीते, चार हारे और एक ड्रा रहा। भारतीय टीम अब अगले साल अगस्त में दो टेस्ट मैच की शृंखला के लिए श्रीलंका का दौरा करेगी और उसके बाद अक्तूबर-नवंबर में न्यूजीलैंड के खिलाफ शृंखला खेलेगी।

भारत को 2030 राष्ट्रमंडल खेलों की मेजबानी मिली | आयोजन | खेल मंत्री मनसुख मांडविया ने बताया गर्व का पल

भारत को 2047 तक खेलों में शीर्ष पांच देशों में लाना लक्ष्य

जनसत्ता खेल
नई दिल्ली, 26 नवंबर।

अहमदाबाद को राष्ट्रमंडल खेल 2030 का मेजबान चुने जाने को देश के लिए गर्व का पल बताते हुए खेलमंत्री मनसुख मांडविया ने बुधवार को बताया कि सरकार का दीर्घकालिन लक्ष्य भारत को 2047 में आजादी के सौवें साल में खेलों में शीर्ष पांच देशों में लाना है। ग्लासगो में राष्ट्रमंडल खेलों की आम सभा के दौरान अहमदाबाद को 2030 खेलों की मेजबानी के अधिकार औपचारिक रूप से प्रदान किए गए जिससे दो दशकों के बाद इस आयोजन के भारत में वापसी का रास्ता साफ हो गया। राष्ट्रमंडल खेलों के सौ साल भी इस अवसर पर पूरे होंगे जो पहली बार 1930 में कनाडा में आयोजित हुए थे।

मांडविया ने मेजर ध्यानचंद नेशनल स्टेडियम पर लेजर शो के बीच कहा, 'राष्ट्रमंडल खेलों के सौवें साल में इन खेलों का आयोजन भारत में होना हमारे लिए गौरव की बात है। राष्ट्रमंडल खेल परिषद के लिए ये खेल बहुत महत्वपूर्ण है और भारत में आयोजन की मुझे खुशी भी है और गर्व भी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में देश बदल रहा है।' पिछले एक दशक में खेलों में देश के अलग अलग 18 से अधिक शहरों में 22 से अधिक बड़े टूर्नामेंटों का आयोजन किया गया।

'अहमदाबाद को मेजबानी मिलना प्रधानमंत्री की दूरदृष्टि का प्रमाण'

नई दिल्ली, 26 नवंबर (भाषा)। गृहमंत्री अमित शाह ने बुधवार को बताया कि अहमदाबाद को राष्ट्रमंडल खेल 2030 की मेजबानी मिलना भारत को खेलों के वैश्विक 'हाटस्पाट' बनाने के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की दूरदृष्टि का प्रमाण है। शाह ने एक्स पर भारतवासियों को बधाई दी ।

शाह ने लिखा, 'यह हमारे भारत को वैश्विक खेलों का हाटस्पाट बनाने की प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की दूरदृष्टि का प्रमाण है। मोदी जी ने एक दशक में विश्व स्तरीय बुनियादी ढांचा तैयार करके कुशल प्रशासन और सतत टीमवर्क से देश के सामर्थ्य को बढ़ाया है।'

एससी छात्रों को सालाना दो लाख रुपये तक मिलेगी छात्रवृत्ति

नई दिल्ली, प्रेट्र: अनुसूचित जाति के छात्रों को उच्च शिक्षा के लिए अब दो लाख रुपये तक की छात्रवृत्ति दी जाएगी। सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय ने 'अनुसूचित जाति छात्रों के लिए उच्च स्तरीय छात्रवृत्ति योजना' के नए दिशा-निर्देश जारी किए हैं। इसमें शैक्षणिक वर्ष 2024-25 के लिए वित्तीय सहायता बढ़ाई गई है और संस्थानों की जवाबदेही को सख्त किया गया है। इस योजना का लक्ष्य अनुसूचित जाति छात्रों के लिए गुणवत्तापूर्ण उच्च शिक्षा को बढ़ावा देना है। इसके तहत भारत के प्रमुख शैक्षणिक संस्थानों में पूरी ट्यूशन फीस का भुगतान किया जाता है और शैक्षणिक भत्ते प्रदान किए जाते हैं।

- सीधे खातों में भेजी जाएगी यह छात्रवृत्ति, पहले साल किताबों-लैपटाप के लिए मिलेंगे 86 हजार
- बाद के वर्षों में दिए जाएंगे 41 हजार, अधिकतम आठ लाख होनी चाहिए अभिभावक की आय

इन संस्थानों के छात्रों को मिलेगी छात्रवृत्ति

यह छात्रवृत्ति सिर्फ उन अनुसूचित जाति के छात्रों को मिलेगी, जिन्हें अधिसूचित संस्थानों में प्रवेश मिला है। इन संस्थानों में आइआइटी, आइआइएम, एम्स, एनआइटी, राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय, राष्ट्रीय फैशन प्रौद्योगिकी संस्थान (निफ्ट), राष्ट्रीय डिजाइन संस्थान (एनआइडी) और अन्य मान्यता प्राप्त महाविद्यालय शामिल है। केवल प्रथम वर्ष के छात्र ही नई छात्रवृत्ति के लिए पात्र होंगे, जबकि इसका नवीनीकरण उनके पाठ्यक्रम की पूर्णता तक प्रदर्शन के आधार पर जारी रहेगा।

संशोधित वित्तीय मानकों के तहत केंद्र सरकार निजी संस्थानों के छात्रों को पूरी ट्यूशन फीस और गैर-वापसी योग्य शुल्क प्रदान करेगी, जिसकी सीमा प्रति वर्ष दो लाख रुपये निर्धारित की गई है। इसके अलावा छात्रों को पहले वर्ष में 86 हजार रुपये और इसके बाद के वर्षों में 41 हजार रुपये का शैक्षणिक भत्ता भी दिया जाएगा। यह राशि आवास, किताबें और लैपटाप जैसे खर्चों के लिए होगी। डीबीटी के माध्यम से सीधे बैंक खातों में यह छात्रवृत्ति भेजी जाएगी। लाभार्थियों को अन्य केंद्रीय या राज्य योजनाओं से समान छात्रवृत्ति प्राप्त करने की अनुमति नहीं होगी। यह छात्रवृत्ति उन अनुसूचित जाति छात्रों के लिए उपलब्ध होगी, जिनके अभिभावक की वार्षिक आय आठ लाख रुपये तक है।

30 प्रतिशत छात्रवृत्ति छात्राओं के लिए आरक्षित: मंत्रालय ने 2024-25 के लिए कुल 4400 नई छात्रवृत्ति आवंटन निर्धारित किया है। योजना की कुल सीमा 2021-22 से 2025-26 तक 21,500 आवंटन है। इनमें से 30 प्रतिशत छात्रवृत्ति अनुसूचित जाति की छात्राओं के लिए आरक्षित होगी। पर्याप्त छात्राएं उपलब्ध नहीं होने पर संस्थानों को उनके कोटे की छात्रवृत्ति छात्रों को देने के लिए अधिकृत किया जाएगा। मंत्रालय ने संस्थानों को छात्रों की जाति और आय प्रमाणपत्रों के सत्यापन, अपनी विवरणिका (प्रास्पेक्टस) में इस योजना का प्रचार तथा छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन की निगरानी की जिम्मेदारी सौंपी है।

दो से अधिक भाई-बहनों को नहीं मिलेगा लाभ: दिशा-निर्देशों का उल्लंघन करने वालों को इस योजना से बाहर किया जा सकता है। हालांकि, मौजूदा लाभार्थियों को उनका पाठ्यक्रम पूरा होने तक धनराशि मिलती रहेगी। योजना के तहत एक ही परिवार के दो से अधिक भाई-बहनों को लाभ नहीं मिलेगा। चयन के बाद यदि कोई छात्र संस्थान बदलता है, तो उसकी पात्रता समाप्त हो जाएगी।

दैनिक जागरण पेज न. 01

दक्षिण के तीर्थ स्थलों का दर्शन कराएगी भारत गौरव ट्रेन

18 जनवरी को बेतिया से रवाना होगी भारत गौरव पर्यटक ट्रेन, पटना जंक्शन से गुजरेगी

धार्मिक पर्यटन

जागरण संवाददाता, पटना: नव वर्ष की शुरुआत में रेल मंत्रालय और आइआरसीटीसी के संयुक्त प्रयास से बिहार के तीर्थयात्रियों के लिए एक शानदार अवसर आया है। दो धाम के साथ दक्षिण भारत यात्रा के लिए भारत गौरव पर्यटक ट्रेन 18 जनवरी को बेतिया से शुरू होगी। यह ट्रेन बिहार के यात्रियों को दक्षिण भारत के पावन तीर्थस्थलों के दर्शन कराएगी। यह आध्यात्मिक यात्रा कुल 15 दिनों की होगी। इस यात्रा के दौरान पर्यटक प्रमुख रूप से तिरुपति बालाजी, रामनाथस्वामी ज्योतिर्लिंग, मल्लिकार्जुन ज्योतिर्लिंग और जगन्नाथ धाम पुरी जा सकेंगे। यह विशेष तीर्थ ट्रेन बेतिया से प्रारंभ होकर रक्सौल, सीतामढ़ी, दरभंगा, समस्तीपुर, मुजफ्फरपुर, हाजीपुर, पाटलिपुत्र, पटना जंक्शन, बख्तियारपुर, किऊल और जसीडीह सहित बिहार के कई प्रमुख शहरों से होकर गुजरेगी।

भारत गौरव पर्यटक ट्रेन की जानकारी देते आइआरसीटीसी के अधिकारी। • जागरण

इन महत्वपूर्ण धार्मिक स्थलों की रेलवे कराएगा यात्रा

- तिरुपति बालाजी एवं पद्मावती मंदिर
- रामेश्वरम – रामनाथस्वामी ज्योतिर्लिंग
- मदुरै – मीनाक्षी अम्मन मंदिर
- कन्याकुमारी – कन्याकुमारी मंदिर एवं विवेकानंद राक मेमोरियल
- तिरुवनंतपुरम – पद्मनाभस्वामी मंदिर
- मल्लिकार्जुन – मल्लिकार्जुन ज्योतिर्लिंग
- पुरी – श्री जगन्नाथ धाम

आइआरसीटीसी के क्षेत्रीय प्रबंधक राजेश कुमार ने बताया कि इस यात्रा में 'दो धाम' के रूप में रामेश्वरम और जगन्नाथ पुरी के दर्शन शामिल हैं। साथ ही यात्री तिरुपति बालाजी, कन्याकुमारी और तिरुवनंतपुरम स्थित भव्य परमानंद स्वामी मंदिर के भी दर्शन कर सकेंगे। इस यात्रा में यात्रियों के लिए विशेष छूट दी गई है। 10 या अधिक लोग सामूहिक रूप से यात्रा की बुकिंग करते हैं, तो प्रत्येक यात्री को 750 रुपये की विशेष छूट मिलेगी।

ट्रेन में यात्रियों की सुविधा के लिए स्लीपर क्लास, तृतीय एसी और द्वितीय एसी कोच की व्यवस्था की गई है। पूरी यात्रा के दौरान यात्रियों के लिए स्वच्छ और स्वादिष्ट भोजन की व्यवस्था होगी। साथ ही यात्रियों की सुरक्षा और स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखते हुए ट्रेन में एक मेडिकल प्रैक्टिशनर की सेवाएं भी उपलब्ध रहेंगी। राजेश कुमार ने बताया कि यह यात्रा देखो अपना देश और एक भारत श्रेष्ठ भारत अभियान को मजबूत करने की दिशा में आयोजित की गई है। इसका उद्देश्य देश के विभिन्न क्षेत्रों को जोड़ना, धार्मिक पर्यटन के साथ सांस्कृतिक एकता को बढ़ावा देना और यात्रियों को सुरक्षित, आरामदायक व सर्वसमावेशी यात्रा अनुभव प्रदान करना है। स्लीपर क्लास में यात्रा का किराया 27,535/- रुपये प्रति व्यक्ति है। थ्री एसी में 37,500 और 2 एसी में 51,405 रुपये रखा गया है। कुल 14 रात व 15 दिन की इस यात्रा में, होटल ठहराव, शाकाहारी भोजन, स्थानीय दर्शनीय स्थलों का भ्रमण, स्थानांतरण व्यवस्था, आनबोर्ड सुरक्षा, यात्रा बीमा और आइआरसीटीसी की उच्चस्तरीय सेवाएं शामिल हैं। संजीव कुमार ने कहा कि बुकिंग के लिए वेबसाइट www.irctc.com पर विस्तृत जानकारी उपलब्ध है। मौके पर असिस्टेंट मैनेजर विश्वरंजन साहू, आंचलिक कार्यालय कोलकाता के मुख्य पर्यवेक्षक संजीव कुमार व पटना के मुख्य पर्यवेक्षक दीपांकर मुन्ना भी मौके पर मौजूद थे।

धुंध से ट्रेनों की समयबद्धता में गिरावट, कई 11 घंटे तक विलंब

जागरण संवाददाता, पटना: घने कोहरे ने रेल यातायात को प्रभावित करना शुरू कर दिया है। दानापुर मंडल से गुजरने वाली दर्जनों ट्रेनें दो से सात घंटे तक देरी से चल रही हैं। कोहरे के कारण दानापुर मंडल की समयबद्धता में पांच से सात प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गई है। अभी तक जहां यह 85 प्रतिशत से ऊपर थी, वहीं अब करीब 80 प्रतिशत के आसपास रह गई है। सबसे खराब हालत वाराणसी मंडल की है, जहां केवल 65 प्रतिशत ट्रेनें ही समय पर चल पा रही हैं। लखनऊ मंडल में यह आंकड़ा 75-80 प्रतिशत के बीच है। दानापुर मंडल की स्थिति अभी भी इन दोनों से बेहतर है। कोहरे में सुरक्षित परिचालन के लिए रेलवे ने सभी इंजनों में फाग सेफ डिवाइस लगवा दिए हैं और ट्रेनों की रफ्तार पर भी नियंत्रण रखा जा रहा है। साथ ही सभी सिग्नल पोस्ट पर ल्यूमिनस एवं रिफ्लेक्टिव स्ट्रिप लगाई गई है। सिग्नल साइटिंग बोर्ड पर लाइन मार्किंग की गई है। लेवल क्रासिंग बैरियर पर भी चमकदार स्ट्रिप लगाई गई है। एक हजार से अधिक फाग सेफ डिवाइस तैनात किए गए हैं। इसके अलावा कोहरे के मद्देनजर दानापुर मंडल से होकर जाने वाली करीब दो दर्जन ट्रेनें एक दिसंबर से अस्थायी रूप से रद कर दी गई हैं।

आज कुछ प्रमुख ट्रेनों की देरी

- 12370 कुम्भ एक्सप्रेस : 11 घंटे 17 मिनट लेट
- 03222 आनंद विहार-राजगीर फेस्टिवल स्पेशल : 11 घंटे 42 मिनट लेट
- 18626 कोशी सुपर एक्सप्रेस : 6 घंटे 16 मिनट लेट
- 12333 विभूति एक्सप्रेस : 2 घंटे 51 मिनट लेट
- 03232 आनंदपुर साहिब-राजगीर मेमू : 2 घंटे 15 मिनट लेट
- 12332 हिमगिरी एक्सप्रेस : 1 घंटा 34 मिनट लेट
- 12318 अकाल तख्त एक्सप्रेस : 1 घंटा 30 मिनट लेट
- 18623 इस्लामपुर-हटिया एक्सप्रेस : 1 घंटा लेट

दैनिक जागरण पेज न. 05

मधेपुरा रेल इंजन कारखाना में 12 हजार हार्स पावर के 550 रेलइंजन का निर्माण

उपलब्धि

- एल्सटाम व भारतीय रेलवे ने मनाई एमईएलपीएल की 10वीं वर्षगांठ
- मधेपुरा में बना लोकोमोटिव छह हजार टन तक भार खींचने में सक्षम

मधेपुरा रेल इंजन कारखाना में निर्मित रेल इंजन। ● जागरण

संवाद सहयोगी, जागरण ● मधेपुरा : मधेपुरा में स्थापित रेल इंजन कारखाना ने बुधवार को अपने 10 वर्ष पूरे किए। इस मौके पर भारतीय रेलवे और फ्रांस की कंपनी एल्सटाम ने उत्तर प्रदेश के सहारनपुर स्थित मेंटेनेंस डिपो में समारोह आयोजित कर जश्न मनाया। मधेपुरा इलेक्ट्रिक लोकोमोटिव प्राइवेट लिमिटेड (एमईएलपीएल) में अब तक 12 हजार हार्सपावर क्षमता वाले 550 से अधिक स्वदेशी इलेक्ट्रिक इंजन तैयार किए जा चुके हैं। इतनी क्षमता वाले इंजन बनाने वाले देशों में भारत छठे स्थान पर है, जो महत्वपूर्ण उपलब्धि मानी जा रही है।

एल्सटाम भारतीय रेलवे के साथ पब्लिक-प्राइवेट पार्टनरशिप के तहत मधेपुरा में मालवाहक रेल इंजन का निर्माण करती है। एल्सटाम के अनुसार कंपनी को 12 हजार एचपी क्षमता वाले 800 इलेक्ट्रिक सुपर-पावर्ड डबल-सेक्शन लोकोमोटिव (इंजन) भारतीय रेल को आपूर्ति करनी है, जिनमें लगभग छह हजार टन तक का लोड खींचने की क्षमता है। इसके साथ ही कंपनी को 13 वर्षों तक इन लोकोमोटिव के मेंटेनेंस की जिम्मेदारी भी सौंपी गई है। मई 2020 में पहला इंजन व्यावसायिक सेवा में शामिल हुआ था। इसके बाद से उत्पादन और सेवा दोनों ही क्षेत्र लगातार आगे बढ़ रहे हैं। एल्सटाम इंडिया के प्रबंध निदेशक ओलिवियर लाइसन ने कहा कि मधेपुरा परियोजना मेक इन इंडिया और आत्मनिर्भर भारत की दिशा में मजबूत पहल साबित हुई है। इससे स्थानीय स्तर पर सप्लाई चेन विकसित हुई और दस हजार से अधिक कौशल आधारित नौकरियां तैयार हुईं। कंपनी ने नागपुर और सहारनपुर में आधुनिक मेंटेनेंस डिपो तैयार किए हैं, जहां उन्नत तकनीक की मदद से इंजनों की निगरानी और देखरेख की जाती है। अब तक नागपुर, सहारनपुर और साबरमती में भारतीय रेलवे के 22 हजार से अधिक कर्मचारियों को प्रशिक्षण दिया जा चुका है। एल्सटाम की ओर से जारी प्रेस विज्ञप्ति में बताया गया कि मधेपुरा का यह प्लांट देश के सबसे बड़े ग्रीनफील्ड रेल निर्माण केंद्रों में माना जाता है। 250 एकड़ में फैला यह परिसर हर वर्ष 120 लोकोमोटिव बनाने की क्षमता रखता है। सुरक्षा और गुणवत्ता के अंतरराष्ट्रीय मानकों पर यह प्लांट खरा उतरता है। भारतीय रेलवे के साथ एल्सटाम की साझेदारी ने इस क्षेत्र में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रोजगार के अवसर बढ़ाए हैं। साथ ही कंपनी आसपास के गांवों में शिक्षा, स्वास्थ्य, महिला सशक्तीकरण और कौशल विकास जैसे क्षेत्रों में निरंतर निवेश कर रही है। इससे यह परियोजना केवल औद्योगिक विकास ही नहीं, बल्कि सामाजिक बदलाव का माध्यम भी बन गई है।

दैनिक जागरण पेज न. 09

पाकिस्तान से और बढ़ा खतरा

शिवकांत शर्मा

अमेरिका-चीन की तरह ही मजबूत हो रहे जनरल मुनीर के दुस्साहस और पाकिस्तान में जिहादी हिंसा के बदलते रूप की भारत अनदेखी नहीं कर सकता

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने 11 नवंबर को इस्लामाबाद में हुए आत्मघाती बम धमाके की तो आतंकवादी हमला बता कर निंदा की, पर उससे एक दिन पहले दिल्ली में लाल किले के निकट आत्मघाती जिहादी बम धमाके को केवल धमाका बताकर संवेदना प्रकट कर दी। दिल्ली में हुए धमाके के तार पाकिस्तान के प्रतिबंधित जिहादी संगठन जैश-ए-मोहम्मद से जुड़े थे। यकीन नहीं होता कि यह वही ट्रंप हैं जिन्होंने 2018 में लिखा था, 'पिछले 15 वर्षों में अमेरिका ने पाकिस्तान को बेवकूफी में 33 अरब डालर की मदद दी, जिसके बदले झूठ और फरेब के सिवा कुछ नहीं पाया।' इस बीच आपरेशन सिंदूर के दौरान पाकिस्तान के सेनाध्यक्ष जनरल मुनीर ने न जाने कौन सी घुट्टी पिला दी कि ट्रंप के सुर ही बदल गए हैं। अब वे उनके चहेते बन गए हैं। इतने चहेते कि सारी परंपराओं को ताक पर रखकर उन्हें व्हाइट हाउस में दावत दी गई, महान नेता कहकर तारीफ की गई और तीन महीने में तीन मुलाकातें हुईं। दुनिया के सबसे शक्तिशाली देश के नेता से अपने लिए 'महान' जैसे विशेषण सुनकर किसे गुमान नहीं होगा? उत्साहित होकर मुनीर सेनाप्रमुख से फील्ड मार्शल बन गए। भले ही भारत से देश और दुनिया के लोगों ने पाकिस्तान को सबक सिखाने के सुबूत माँगे हों, मगर जनरल मुनीर को न पाकिस्तानी जनता को कुछ दिखाना पड़ा न दुनिया को। उधर ट्रंप बार-बार यही राग अलापते रहे कि लड़ाई उन्होंने रुकवाई थी और टैरिफ की धमकी देकर रुकवाई थी। भारत के मना करने पर भी वे बाज नहीं आए। ऊपर से 'अमेरिका-चीन आर्थिक एवं सुरक्षा समीक्षा आयोग' ने अपनी रिपोर्ट में ढेतरफा बात कह दी। अमेरिकी कांग्रेस को दी रिपोर्ट में एक तरफ तो कहा कि चीन ने फर्जी इंटरनेट मीडिया अकाउंट और एआइ तस्वीरों के सहारे अपने जे-35 लड़ाकू विमानों को फ्रांसीसी राफेल विमानों से बेहतर दिखाने के लिए 'दुष्प्रचार अभियान' चलाया। दूसरी तरफ कहा कि लड़ाई में पाकिस्तान का पलड़ा भारी था, क्योंकि चीन इस भिड़ंत का इस्तेमाल अपने हथियारों की क्षमताओं को परखने और उनका प्रचार करने के लिए कर रहा था।

पाकिस्तान की कठपुतली सरकार के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ के लिए इतना काफी था। उन्होंने गुलाम कश्मीर में एक कार्यक्रम के दौरान दावा किया कि अमेरिकी कांग्रेस में पेश रिपोर्ट पाकिस्तान की जीत को प्रमाणित करती है। भारत की प्रमुख विपक्षी पार्टी कांग्रेस इस रिपोर्ट के विरोध-खंडन की माँग कर रही है, मगर भारत सरकार चुप है, क्योंकि भारत और अमेरिका के संबंध इस समय

आवेश रावत

नाजुक दौर से गुजर रहे हैं। क्रिप्टोकरेंसी व्यापार के पारिवारिक सौदे और दुर्लभ खनिजों, तेल और अरब सागर में एक बंदरगाह के प्रस्तावों से मुनीर के मुरीद हुए ट्रंप ने पाकिस्तान के साथ तो टैरिफ की दरें कम कर दी हैं, परंतु भारत की स्वायत्तता, स्वाभिमान और राष्ट्रीय हित अभी भारत से जुड़ी उनकी हसरतों में आड़े आ रहे हैं। भारत को अपने व्यापार हितों के साथ उन सभी पहलुओं पर गंभीरता से सोचना और रणनीति बनानी है, जिन्हें ट्रंप अपनी विशुद्ध लेनदेन वाली नीति के कारण अनदेखा कर रहे हैं। जैसे जलवायु परिवर्तन की मार, विकासशील देशों के व्यापारिक और कूटनीतिक हित, नियमबद्ध वैश्विक व्यवस्था की बहाली और हिंद-प्रशांत की क्षेत्रीय सुरक्षा। इसलिए पीएम मोदी ने जी-20 से ट्रंप की नाराजगी को जानते हुए भी जोहानिसबर्ग शिखर सम्मेलन में शामिल होकर सही किया।

भारत इस समय पाकिस्तान में सत्ता के केंद्रीकरण और जिहादी हिंसा के बदलते स्वरूप की अनदेखी नहीं कर सकता। जनरल परवेज मुशर्रफ ने खुद पर जानलेवा हमलों की कोशिश के बाद इस्लामाबाद की लाल मस्जिद के दो मदरसों पर छापे डलवाए और माना था कि मदरसे जिहादी आतंक की फैक्ट्रियां बन चुके हैं। उन्होंने उन्हें सुधारने की कोशिश भी की, पर सफल नहीं हो पाए। तालिबान, तहरीके तालिबान पाकिस्तान, जैश, लश्कर आदि सभी जिहादी आतंकी संगठन मदरसों की ही देन हैं। पाकिस्तान में दर्जनों ऐसे मदरसे हैं, जहां जिहादी आतंक का प्रशिक्षण दिया जाता है। दिवालिया आर्थिक हालात की वजह से पाकिस्तान की निर्भरता विदेशी कर्ज पर बढ़ गई है और ऋणदाता एजेंसियां जिहादी आतंक की फंडिंग बंद करने की माँग करने लगी हैं। इसलिए जिहादी नेटवर्क्स ने अब स्कूलों और कालेज के छात्रों और पेशेवरों को अपने रंग में रंगना शुरू किया है। चांदनी चौक का धमाका करने वाला डाक्टरों का गिरोह इसी रणनीति का हिस्सा था। यह जिहादी रणनीति भारत की सुरक्षा और जांच एजेंसियों के लिए नई चुनौतियां खड़ी करती है। इस कड़ी में पहली चुनौती भारत के अपने हजारों मदरसों को जिहादी मानसिकता के अड्डे बनने से रोकना है। राजनीतिक खेमेबाजी के चलते यह काम आसान नहीं होगा। अल फलाह जैसी मुख्यधारा की शिक्षा और गैर-शिक्षण संस्थाओं में इसे रोक पाना और भी कठिन होगा। दूसरी चुनौती जिहादी घुसपैठियों को समय रहते पकड़ना और उनके प्रायोजकों पर उत्तरोत्तर बड़ी चोट करना है। भारत ने आपरेशन सिंदूर द्वारा इस नीति का एलान तो कर दिया है, पर क्या उसे निभा पाना संभव होगा? निभा भी लिया तो क्या जिहादी और उनके प्रायोजक बाज आ जाएंगे? अलकायदा, आइएस, हिजबुल्ला और हमास जैसे जिहादी संगठन और उनके नेता मिटने की मिट गए पर बाज कहां आए? पाकिस्तान और उसके जिहादी भी उसी सोच के हैं।

मुनीर भले ही ट्रंप की मिजाजपुर्सी कर अपनी कुर्सी को मजबूत बनाने में लगे हुए हों, लेकिन उनकी गद्दी की मजबूती चीनी रहमोकरम पर ही टिकी है। जब पाकिस्तान को चीन और अमेरिका जैसी शक्तियों की शह मिली हो, तब वैश्विक मंचों पर उसे अलग-थलग करना और कठिन है। पाकिस्तानी हर भिड़ंत में मुंह की खाकर भी उसी तरह जीत के दावे करेंगे, जैसे 1965 की हार के बाद अयूब खान ने, 1971 की हार के बाद याह्या खान और कारगिल के बाद मुशर्रफ करते रहे। असलियत समझ आने के बाद अयूब और याह्या को तो जनता ने उतार फेंका, पर मुशर्रफ 9/11 की घटना के कारण बच गए थे। शायद यही सोच कर मुनीर ने संविधान संशोधन कराया है और खुद को निरंकुश बना लिया है।

(लेखक बीबीसी हिंदी के पूर्व संपादक हैं)
response@jagran.com

दैनिक जागरण for Essay

नई से पहले सरकार के सामने बंद चीनी मिलों को चलाना बड़ी चुनौती

राज्य ब्यूरो, जागरण, पटना : बिहार में 1980 से पहले 28 चीनी मिलें थीं। 1990 के उपरांत नौ चीनी मिलों की स्थिति खराब होती चली गई। 2005 आते-आते नौ चीनी मिले बंद हो गईं। अब नई सरकार ने 34 चीनी मिलों को चलाने की घोषणा की है। इनमें नई 25 एवं नौ पुरानी चीनी मिलें सम्मिलित हैं।

एनडीए की सरकार बनते ही गन्ना उद्योग विभाग चीनी मिलों को चालू कराने की कवायद में जुट गया है। राज्य की बंद नौ चीनी मिलों को चालू कराने की तैयारी शुरू कर दी गई है। इसके लिए मुख्य सचिव की अध्यक्षता में भी एक टीम गठित की गई है। ताकि इन बंद चीनी मिलों को चालू कराने में आ रही बाधा को दूर किया जा सके। लैंड बैंक बनाने के साथ ही किसानों का बकाया भुगतान को लेकर भी पहल शुरू हो गई है।

विदित हो कि विधानसभा चुनाव प्रचार के दौरान प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, मुख्यमंत्री नीतीश कुमार एवं गृहमंत्री अमित शाह द्वारा बिहार के युवाओं को रोजगार उपलब्ध कराने और बंद पड़ी चीनी मिलों को चालू कराने की घोषणा की गई थी। प्रधानमंत्री बिहार की मीठी चाय पीने का जिक्र भी किए थे। राज्य में एनडीए की सरकार बनते ही गन्ना उद्योग विभाग बंद पड़ी चीनी मिलों को चालू कराने के साथ राज्य में नई चीनी मिलों को स्थापित करने की तैयारी में जुट गया है। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की अध्यक्षता में हुई पहली कैबिनेट बैठक में राज्य के नौ बंद पड़े चीनी मिलों को चालू कराने की स्वीकृति प्रदान की गई है, जिसमें समस्तीपुर इकाई, दरभंगा की सकरी इकाई एवं रैयाम इकाई, मुजफ्फरपुर की मोतीपुर इकाई, कावनपुर सुगर वर्क्स लिमिटेड मढ़ौरा, कावनपुर सुगर वर्क्स लिमिटेड बारा चकिया पूर्वी चंपारण, कावनपुर सुगर वर्क्स लिमिटेड चनपटिया पश्चिम चंपारण, श्रीहनुमान सुगर एंड इंडस्ट्रीज लिमिटेड मोतिहारी और सासामुसा सुगर वर्क्स प्राइवेट लिमिटेड गोपालगंज शामिल है। इनमें मोतिहारी और सासामुसा की चीनी मिल निजी क्षेत्र की हैं।

25 नई चीनी मिलों के लिए लैंड बैंक बनाने को लेकर शीघ्र पहल की तैयारी

निजी क्षेत्र की बंद चीनी मिलें

बी हनुमान सुगर- 2013-14

सासामुसा सुगर- 2021-22

कौन चीनी मिल कब बंद हुई

बिहार राज्य चीनी निगम की बंद मिलें

समस्तीपुर चीनी मिल	1996-97
सकरी, दरभंगा	1996-97
रैयाम, दरभंगा	1993-94
मोतीपुर, मुजफ्फरपुर	1996-97

ब्रिटिश इंडिया कारपोरेशन (बीआइसी) की बंद मिलें

कावनपुर सुगर, मढ़ौरा, सारण	1997-98
कावनपुर सुगर, बारा, चकिया पूर्वी चंपारण	1994-95
कावनपुर सुगर, चनपटिया, पश्चिम चंपारण	1994-95

- भूमि के साथ-साथ किसानों के बकाया भुगतान को लेकर करना होगा समुचित प्रबंध
- सरकार ने 34 चीनी मिलों को फिर से चलाने की घोषणा की है, इनमें 25 नई व नौ पुरानी

मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के निर्देश पर राज्य की बंद पड़ी चीनी मिलों को फिर से चालू कराने का प्रयास किया जा रहा है। गन्ना उद्योग विभाग राज्य के बंद नौ चीनी मिलों को चालू कराने के साथ ही राज्य में नई चीनी मिलों को स्थापित कराने की तैयारी में जुट गया है। इसके लिए मुख्य सचिव की अध्यक्षता में एक कमेटी गठित की गई है। कमेटी की रिपोर्ट आने के बाद आगे की कार्रवाई की जाएगी।

– **संजय कुमार**, गन्ना उद्योग मंत्री, बिहार सरकार

सकरी व रैयाम चीनी मिल का भूमि अधिग्रहण का कार्य पूर्ण

गन्ना उद्योग विभाग ने दरभंगा जिले में स्थित सकरी और रैयाम चीनी मिल को चालू कराने के लिए भूमि का अधिग्रहण कर लिया है। जबकि अन्य सात चीनी मिलों पर विवाद चल रहा है। बताया जाता है कि सकरी चीनी मिल वर्ष 1996 में और रैयाम चीनी मिल वर्ष 1993 में बंद हो गई थी।

राज्य की पहली मढ़ौरा चीनी मिल 28 साल पूर्व हुई थी बंद

राज्य में ब्रिटिश इंडिया कॉरपोरेशन (बीआइसी) ग्रुप की तीन चीनी मिलें संचालित थीं। जिनमें कावनपुर (अब छपरा) सुगर वर्क्स लिमिटेड मढ़ौरा, कावनपुर सुगर वर्क्स लिमिटेड बारा चकिया पूर्वी चंपारण, कावनपुर सुगर वर्क्स लिमिटेड चनपटिया पश्चिम चम्पारण शामिल है। इनमें मढ़ौरा चीनी मिल वर्ष 1997 में बंद हो गई थी। इसी प्रकार चकिया और चनपटिया की चीनी मिलें वर्ष 1994 में बंद हो गई थी।

अब पिंक बस भी चलाएंगी जीविका दीदियां, मिलेगा प्रशिक्षण : मंत्री

राज्य ब्यूरो, जागरण • पटना : जीविका दीदियां जल्द ही महिलाओं के लिए विशेष पिंक बस भी चलाती नजर आएंगी। उन्हें पिंक बस का ड्राइवर और कंडक्टर बनाया जाएगा। इसके लिए उन्हें खासतौर से प्रशिक्षण दिया जाएगा। परिवहन मंत्री श्रवण कुमार ने बुधवार को विश्वेश्वरैया भवन में आयोजित विभागीय समीक्षा बैठक के दौरान यह जानकारी दी। उन्होंने कहा कि इस पहल से महिला सशक्तीकरण का नया अध्याय शुरू होगा। इससे दीदियों के लिए रोजगार के नए अवसर भी मिलेंगे।

मंत्री ने कहा कि इच्छुक जीविका दीदियों को पहले पटना या औरंगाबाद स्थित हैवी मोटर व्हीकल का प्रशिक्षण इंस्टीट्यूट आफ ड्राइविंग ट्रेनिंग एंड रिसर्च (आइडीटीआर) में दिया जाएगा। इसके बाद प्रशिक्षित जीविका दीदियों की तैनाती पिंक बसों में की जाएगी। इच्छुक लाइट मोटर व्हीकल (एलएमवी) ड्राइविंग लाइसेंस धारक जीविका दीदियां या अन्य महिलाएं 15 दिसंबर 2025 तक आवेदन दे सकती हैं।

प्रशिक्षण के बाद एचएमवी लाइसेंस धारकों को रिक्ति के विरुद्ध संविदा पर नियोजन किया जाएगा। वर्तमान में राज्य में 100 पिंक बसें चलाई जाती हैं। इन बसों के परिचालन के लिए 200 महिलाओं को प्रशिक्षित कर ड्राइवर और कंडक्टर बनाया जाएगा।

15 दिसंबर तक जीविका दीदी समेत अन्य महिलाएं कर सकती हैं आवेदन

ग्रामीण विकास कार्य एवं परिवहन मंत्री श्रवण कुमार। • जागरण आर्काइव

परिवहन मंत्री ने कहा कि सभी लंबित योजनाओं में तेजी लाई जाए और ससमय काम पूरा किया जाए। उन्होंने सड़क दुर्घटनाओं को कम करने की दिशा में आवश्यक कार्य करने का निर्देश दिया। सड़क दुर्घटना मामलों में पीड़ित या पीड़ित के स्वजन को ससमय मुआवजा राशि का भुगतान किया जाए। सड़क सुरक्षा जागरूकता के लिए हेलमेट, सीट बेल्ट विशेष जांच अभियान चलाने का निर्देश भी दिया। इस मौके पर राज्य परिवहन आयुक्त आशुतोष द्विवेदी, विभाग के अपर सचिव प्रवीण कुमार, बीएसआरटीसी के प्रशासक अतुल कुमार वर्मा, संयुक्त सचिव कृत्यानंद रंजन, विशेष कार्य पदाधिकारी कुमारी अर्चना और अरुणा कुमारी सहित अन्य पदाधिकारी मौजूद रहे।

राज्यों में 63 प्रतिशत से अधिक भरे हुए गणना फार्म हो चुके जमा

- चुनाव आयोग ने 12 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में चल रहे एसआइआर के दूसरे चरण का जारी किया ब्योरा
- बंगाल के 78 प्रतिशत से अधिक गणना फार्म हो चुके है जमा

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली: काम के दबाव में बीएलओ की आत्महत्याओं पर जारी विवाद के बीच उत्तर प्रदेश, बंगाल सहित देश के 12 राज्यों व केंद्र शासित प्रदेशों में चल रहे मतदाता सूची के विशेष सघन पुनरीक्षण (एसआइआर) के दूसरे चरण पर भले ही विपक्षी दल सवाल खड़ा रहे हैं, लेकिन चुनाव आयोग के दावे के अनुसार, अब तक 63 प्रतिशत से अधिक मतदाताओं ने अपने भरे हुए गणना फार्म जमा करा दिए हैं। इन्हें आयोग ने अपलोड भी कर दिया है। इनमें गोवा में 87 प्रतिशत फार्म जमा हो चुके हैं। राजस्थान में 82 और तमिलनाडु में 78 प्रतिशत मतदाताओं के भरे हुए गणना फार्म आ चुके हैं। इस मामले में पिछड़े राज्यों में उत्तर प्रदेश है, जहां अब तक सिर्फ 41 प्रतिशत भरे गणना फार्म ही जमा हुए हैं तो 46 प्रतिशत के साथ केरल दूसरे पायदान पर है।

चुनाव आयोग से जारी अधिकारिक आंकड़ों के अनुसार, एसआइआर के दूसरे चरण में शामिल सभी राज्यों में अब तक 99.25 प्रतिशत से अधिक गणना फार्म वितरित हो चुके हैं और अब तेजी से जमा कराने का काम चल रहा है। भरे हुए गणना फार्म चार दिसंबर तक जमा हो सकेंगे और नौ दिसंबर को इन सभी राज्यों की एसआइआर आधारित मसौदा मतदाता सूची जारी हो जाएगी। एसआइआर में शामिल 12 राज्यों व केंद्र शासित प्रदेशों में 27 अक्टूबर 2025 की मतदाता सूची के अनुसार, 50.97 करोड़ मतदाता हैं।

बीएलओ पर नहीं है काम का कोई दबाव : आयोग

काम के दबाव में बीएलओ के आत्महत्या की घटनाओं के दावों को चुनाव आयोग ने खारिज किया है। कहा है कि उन पर कोई काम का दबाव नहीं है। एक बीएलओ को सिर्फ एक हजार मतदाताओं के गणना फार्म बांटने और जमा कराने है। एसआइआर का काम उनके लिए कोई नया नहीं है। आयोग के अधिकारियों के अनुसार, यदि ये घटनाएं सच है तो बिहार में बीएलओ के आत्महत्या की एक भी घटना सामने क्यों नहीं आई।

राष्ट्रमंडल खेलों में शामिल होंगे 15 से अधिक खेल

अभिषेक त्रिपाठी ● जागरण

नई दिल्ली: राष्ट्रमंडल खेल 2030 (सीडब्ल्यूजी) की मेजबानी को लेकर औपचारिक फैसला हो गया है। राष्ट्रमंडल खेलों की वैश्विक शासी संस्था कामनवेल्थ स्पोर्ट ने बुधवार को घोषणा की कि अहमदाबाद को शताब्दी संस्करण का मेजबान शहर चुना गया है। मेजबानी की पुष्टि के साथ यह भी बताया गया कि सीडब्ल्यूजी 2030 में 15 से 17 खेल शामिल होंगे। यह फैसला हाल ही में संपन्न स्पोर्ट प्रोग्राम रिव्यू के आधार पर लिया गया है। इसके तहत एथलेटिक्स, स्विमिंग, मुक्केबाजी, नेटबाल जैसे खेल पहले ही तय किए जा चुके हैं, जबकि अन्य खेलों पर अगले महीने विचार-विमर्श शुरू होगा। पूरी खेल सूची अगले वर्ष जारी की जाएगी। इसके अलावा मेजबान देश को दो नए या पारंपरिक खेल जोड़ने का भी अवसर मिलेगा।

इन खेल पर लगी मुहर

एथलेटिक्स और पैरा एथलेटिक्स, स्विमिंग और पैरा स्विमिंग, टेबल टेनिस और पैरा टेबल टेनिस, बाउल्स और पैरा बाउल्स, वेटलिफ्टिंग और पैरा पावरलिफ्टिंग, आर्टिस्टिक जिम्नास्टिक्स, नेटबाल और मुक्केबाजी।

विचाराधीन खेल

तीरंदाजी, बैडमिंटन, 3x3 बास्केटबाल और 3x3 व्हीलचेयर बास्केटबाल, बीच वालीबाल, क्रिकेट टी-20, साइक्लिंग, डाइविंग, हाकी, जूडो, जिम्नास्टिक्स, रग्बी सेवन, शूटिंग, स्वाश, ट्रायथलान और पैरा ट्रायथलान और कुश्ती।

बेहद सम्मानित महसूस कर रहे: भारतीय ओलिंपिक संघ की अध्यक्ष पीटी उषा ने कहा कि कामनवेल्थ स्पोर्ट द्वारा दिखाए गए विश्वास के लिए हम बेहद सम्मानित महसूस कर रहे हैं। 2030 के खेल न केवल राष्ट्रमंडल अभियान के 100 वर्ष पूरे करेंगे, बल्कि अगले शताब्दी की नींव भी रखेंगे।

बजट सीमा में सफल कार्यक्रम बनाएंगे: गुजरात के प्रधान सचिव (खेल) अश्विनी कुमार ने कहा कि हमने दुनिया में अन्य संस्करणों से सीख ली है। हम सीडब्ल्यूजी को बजट सीमा में सफल कार्यक्रम बनाएंगे। हम एक महीने के भीतर आयोजन समिति का गठन करेंगे।

विश्व एथलेटिक्स 2031 के लिए अहमदाबाद प्रस्तावित: अहमदाबाद को 2028 विश्व अंडर-20 चैंपियनशिप और 2031 विश्व सीनियर एथलेटिक्स चैंपियनशिप के लिए आयोजन स्थल के तौर पर प्रस्तावित किया गया है। अहमदाबाद के 2036 ओलिंपिक की मेजबानी की कोशिश के साथ-साथ यहां अन्य बड़े आयोजनों की मेजबानी के लिए यह पहल की गई है।

19 वर्ष के सिंडारोव बने विश्व विजेता

शतरंज विश्व कप

पणजी, पेट: उज्बेकिस्तान के जावोखिर सिंडारोव बुधवार को शतरंज विश्व कप के फाइनल में चीन के वेई यी को हराकर सबसे कम उम्र के चैंपियन बने। 19 वर्ष के सिंडारोव के विरुद्ध वेई यी ने सफेद मोहरों के साथ एक और आसान ड्रा खेला, लेकिन सिंडारोव अपने सबसे अच्छे फार्म में थे, क्योंकि उन्होंने दूसरे गेम में ही सफेद मोहरों के डिफेंस को तोड़ दिया।

खिताब जीतने के बाद सिंडारोव को लगभग एक करोड़ रुपये की पुरस्कार राशि मिली। उपविजेता रहे वेई को लगभग 75.84 लाख रुपये मिले। तीसरे स्थान पर एंड्रो

जावोखिर सिंडारोव ● पीटी

एसिपेंको ने नोडिरबेक याकुबबोएव को हराया। सिंडारोव ने गेम के शुरुआती स्टेज से ही वेई यी पर दबदबा बना लिया। सिंडारोव ने आखिरी नुकसान पहुंचाने के लिए ठीक समय पर अपने रूक्स एक्टिवेट कर दिए। पहले गेम में वेई यी एक और सालिड ड्रा के लिए काफी सिक्योर लग रहे थे, लेकिन उनकी टैक्टिक्स काम नहीं आईं। आखिरकार सिंडारोव ने वेई यी को 1.5-2.5 से हरा दिया। सिंडारोव ने इस विश्व कप में 16वें वरीय के तौर पर शुरुआत की थी। सिंडारोव, नोडिरबेक के बाद उज्बेकिस्तान के दूसरे सबसे बड़े स्टार के तौर पर सामने आए हैं। अभी मैग्नस कार्लसन के बिना यूरोप नहीं, बल्कि एशिया के शतरंज की दुनिया पर दबदबा है। सिंडारोव, वेई यी और रूस के एसिपेंको इस विश्व कप के क्वालिफायर रहे।

वैश्विक दूध उत्पादन में भारत का 23 प्रतिशत योगदान

- संजय गांधी गव्य प्रौद्योगिकी संस्थान में दुग्ध दिवस पर डा. कुरियन को किया गया याद
- डेयरी उद्योग से जुड़े किसानों को देसी नस्ल के मवेशियों पर निर्भरता बढ़ाने की दी सलाह

जागरण संवाददाता, पटना : बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय के अंगीभूत संजय गांधी गव्य प्रौद्योगिकी संस्थान में राष्ट्रीय दुग्ध दिवस पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें पशु विज्ञान विश्वविद्यालय के कुलपति डा. इन्द्रजीत सिंह ने कहा कि दूध उत्पादन के मामले में भारत विश्व में पहले स्थान पर है और वैश्विक दूध उत्पादन में लगभग 23 प्रतिशत योगदान देता है। उन्होंने कहा कि इस पायदान पर मजबूती से खड़े होने के पीछे की ताकत को-आपरेटिव मूवमेंट है। किसान व पशुपालकों ने एक साथ जुड़कर इस व्यवसाय को श्वेत क्रांति बना दिया। जिस प्रकार पर्यावरण और मौसम में बदलाव देखा जा रहा है, पशुपालकों और डेयरी उद्योग से जुड़े किसानों को देशी पशुओं पर निर्भरता बढ़ानी चाहिए। बिहार में संभावनाओं की कमी नहीं है, विद्यार्थी नौकरी के पीछे नहीं भागकर उद्यम स्थापित करने की दिशा में काम करें।

कार्यक्रम में मौजूद कुलपति प्रो. इन्द्रजीत सिंह, इंडियन डेयरी एसो. बिहार चैप्टर के अध्यक्ष डीके श्रीवास्तव व संस्थान के डीन डा. उमेश सिंह। ● संस्थान

डा. कुरियन की विरासत हमें लगातार प्रेरित करती रहेगी

इंडियन डेयरी एसोसिएशन बिहार चैप्टर के अध्यक्ष डीके श्रीवास्तव विशिष्ट अतिथि के तौर पर मौके पर उपस्थित थे। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय दुग्ध दिवस केवल एक समारोह नहीं, बल्कि किसानों को सशक्त बनाने, आधुनिक तकनीक अपनाने और सहकारी मूल्यों को आगे बढ़ाने का संकल्प है। डा. कुरियन की विरासत हमें लगातार प्रेरित करती रहेगी। डा. कुरियन ने किसानों को संगठित कर अमूल माडल से सहकारी आंदोलन की ऐसी नींव रखी, जिसने भारत को दुग्ध उत्पादन के क्षेत्र में वैश्विक नेतृत्व दिलाया, जो डा. कुरियन के दूरदर्शी नेतृत्व और आपरेशन फ्लड की ऐतिहासिक सफलता का परिणाम है। बिहार के दुग्ध क्षेत्र के बुनियादी ढांचे के सुदृढ़ीकरण, दुग्ध प्रसंस्करण क्षमता बढ़ाने, उन्नत नस्ल सुधार और डिजिटल डेयरी प्रबंधन जैसी पहल से राज्य में स्थिति बेहतर होगी। संस्थान के डीन डा. उमेश सिंह ने कहा कि साहिवाल और थारपारकर जैसे देसी नस्ल के पशु बिहार के वातावरण के बेहद अनुकूल हैं। उन्नत नस्ल के पशुओं का झुंड तभी तैयार हो सकता है जब पशुपालकों को क्वालिटी सीमेन उपलब्ध हो। मौके पर संजय गांधी गव्य प्रौद्योगिकी संस्थान के प्रोफेसर डा. राकेश कुमार, डा. विनीत रानी, डा. संजीव, डा. विपिन, डा. योगेंद्र सिंह जाबैन, डा. सोनिया, डा. दिवाकर, डा. भारती आदि मौजूद थीं।

दैनिक जागरण for Mains

विमानों के इंजन की मरम्मत का पहला केंद्र शुरू

हैदराबाद, प्रेट्र : प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने बुधवार को वीडियो कान्फ्रेंस के माध्यम से तेलंगाना के हैदराबाद स्थित जीएमआर एयरोस्पेस एंड इंडस्ट्रियल पार्क में फ्रांसीसी कंपनी सफ्रान की नई अत्याधुनिक इकाई एयरक्राफ्ट इंजन सर्विसेज इंडिया (एसएईएसआइ) का उद्घाटन किया। 45 हजार वर्ग मीटर में फैली यह इकाई लगभग 1,300 करोड़ रुपये के शुरुआती निवेश से तैयार हुई है। यहां सालाना 300 एलईएपी इंजनों की सर्विसिंग होगी और 2035 तक पूरी परिचालन क्षमता हासिल कर लेने पर यह एक हजार से अधिक भारतीय तकनीशियनों और इंजीनियरों को रोजगार देगी। यह कदम भारत को विमानन क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में बड़ा बदलाव लाएगा और आने वाले वर्षों में 15 अरब डालर तक की बचत होगी।

एसएईएसआइ सफ्रान की समर्पित मेंटेनेंस, रिपेयर और ओवरहाल (एमआरओ) सुविधा है, जो एयरबस ए320 नियो और बोइंग 737 मैक्स विमानों में इस्तेमाल होने वाली एलईएपी (लीडिंग एज एविएशन प्रोपल्शन) इंजनों की सर्विसिंग करेगी। यह दुनिया की सबसे बड़ी विमान इंजन एमआरओ इकाइयों में से एक है और पहली बार किसी वैश्विक इंजन निर्माता ने भारत में एमआरओ आपरेशन शुरू किया है। एमआरओ क्षमताओं के विकास से विदेशी मुद्रा की बचत होगी, उच्च मूल्य वाले रोजगार मिलेंगे और भारत को वैश्विक एविएशन हब बनाने में मदद मिलेगी। पीएम मोदी ने कहा कि भारत विश्व में तेजी से बढ़ रहे घरेलू विमानन बाजारों में से एक है। इस अवसर पर उपस्थित नागरिक उड्डयन मंत्री के. राममोहन नायडू ने कहा कि ग्लोबल एमआरओ हब बनकर भारत आने वाले वर्षों में 15 अरब डालर तक बचा सकता है।

- पीएम ने किया उद्घाटन, 15 अरब डालर तक की बचत, सृजित होंगे हजारों रोजगार
- प्रधानमंत्री ने कहा - भारत विश्व में तेजी से बढ़ रहे घरेलू विमानन बाजारों में से एक

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी वीडियो कान्फ्रेंस के माध्यम से हैदराबाद में सफ्रान की अत्याधुनिक इकाई एयरक्राफ्ट इंजन सर्विसेज इंडिया के उद्घाटन के दौरान संबोधित करते हुए। ● प्रेट्र

'भारत में राफेल के लिए फाइनल असेंबली लाइन लगाने को प्रतिबद्ध'

राफेल फाइटर जेट के लिए इंजन, लैंडिंग गियर तथा इलेक्ट्रिकल सिस्टम सहित कई जरूरी पार्ट्स देने वाले सफ्रान के सीईओ ओलिवियर एंड्रीज ने कहा कि अगर भारतीय वायुसेना फाइटर जेट के लिए और आर्डर देती है तो वह राफेल इंजन और जरूरी पार्ट्स के लिए भारत में एक फाइनल असेंबली लाइन (एफएएल) लगाने के लिए प्रतिबद्ध है।

आइआइटी मद्रास ने विकसित की देश की पहली स्वदेशी पोत यातायात प्रबंधन प्रणाली

- इस प्रणाली से पोत की आवाजाही से संबंधित रणनीतिक डाटा के लीक होने का खतरा नहीं
- सरकार के पास इसके सोर्स कोड, डाटाबेस और समाधान के विभिन्न पहलुओं पर नियंत्रण

नई दिल्ली, प्रेट्र: आइआइटी मद्रास ने बंदरगाहों के लिए देश की पहली स्वदेशी पोत यातायात प्रबंधन प्रणाली विकसित करने में बड़ी सफलता हासिल की है। इस प्रणाली को बंदरगाहों में उपयोग के लिए लगाया जा रहा है। इससे न केवल पोत की आवाजाही से संबंधित रणनीतिक डाटा के लीक होने का खतरा खत्म होगा बल्कि निजी विक्रेताओं और विदेशी प्रदाताओं पर निर्भरता भी कम होगी।पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग मंत्रालय की ओर से उल्लेखित आवश्यकताओं के आधार पर आइआइटी मद्रास स्थित राष्ट्रीय बंदरगाह, जलमार्ग और तट प्रौद्योगिकी केंद्र ने इस प्रणाली को तैयार किया है। एनटीसीपीडब्ल्यूसी प्रमुख के मुरली के अनुसार, यह प्रणाली भारतीय समुद्री क्षेत्र में प्रौद्योगिकी और विशेषज्ञता के स्वदेशीकरण को बढ़ावा देगी और आयात पर निर्भरता को कम करेगी। उन्होंने बताया कि स्वदेशी प्रणाली पोत की आवाजाही से संबंधित रणनीतिक डाटा के लीक होने के खतरे को खत्म करती है। मुरली ने कहा, 'यह प्रणाली आसानी से उन्नत की जा सकती है ताकि संबंधित हितधारकों की लगातार जरूरतों को पूरा किया जा सके और इसमें वैश्विक सर्वोत्तम प्रथाओं को शामिल किया जा सके। यह प्रणाली पहले ही केरल स्थित विझिंजम इंटरनेशनल सीपोर्ट लिमिटेड में लागू कर दी गई है।

इन दिनों

इंटरनेट मीडिया और एआइ लाभ के साथ नुकसान भी!

इंटरनेट मीडिया और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआइ) आज के युवाओं के डिजिटल अनुभव का अभिन्न हिस्सा बन चुके हैं। कनेक्शन और क्रिएटिविटी की बेशुमार खूबियों के साथ इसके नकारात्मक पहलुओं को लेकर भी गंभीर होने की जरूरत है। चर्चा कर रहे हैं

ब्रह्मानंद मिश्र..

दो दशक पहले जब फेसबुक, ट्विटर से लोग परिचित हुए, तो यह आभासी दुनिया का ऐसा आकर्षण था, जहां लोग हैरानी से दुनिया को सिमटते हुए देख रहे थे। इंटरनेट मीडिया के साथ जुड़ते हुए लोग खुद को सशक्त महसूस करने लगे, बिना रोक-टोक बोलने की आजादी मिल गई और ऐसे लगा कि दुनिया के साथ हम कनेक्ट हो रहे हैं, लेकिन असल में यह वास्तविक दुनिया के साथ हमारे अलगाव की शुरुआत थी। आभासी दुनिया के "लाइक्स, शेयर्स" ने एक पूरी पीढ़ी को स्क्रीन से चिपका दिया। इंटरनेट मीडिया के साथ बड़े हो रहे बच्चे ना केवल भावनात्मक और सामाजिक संबंधों से दूर होने लगे, बल्कि एकाग्रता भी उनसे दूर हो गई। अब एआइ के साथ भी इसी गलती को दोहरा रहे हैं, लेकिन गति इस बार और भी तेज है। एआइ पर बढ़ती निर्भरता को भविष्य के खतरे के तौर पर देखा जा रहा है, लेकिन संभावित मुसीबत अभी से ही महसूस की जाने लगी है।

तरीकों को समझने और बदलने की जरूरत : इंटरनेट मीडिया ने जहां एकाग्रता को छीन लिया, तो वहीं अब एआइ से अनुभूति या एहसास छिनने का डर है। एक पीढ़ी जो आभासी तुलना और प्रदर्शन को देखकर बड़ी हुई है, वह किसी बात को लेकर ठहरने या उस पर विचार करने की आदी नहीं है। इंटरनेट मीडिया और एआइ के प्रयोग की सीमा और दुरुपयोग की आशंका को लेकर चेतने की जरूरत है, खासकर बच्चों के मामले में तो यह तत्परता से होना चाहिए।

कितना सही है लिखने में चैटजीपीटी की मदद : मस्तिष्क की कार्यप्रणाली पर एआइ के प्रभावों को समझने के लिए मैसाचुसेट्स इंस्टीट्यूट आफ टेक्नोलाजी (एमआइटी) ने एक अध्ययन किया। इस दौरान कुछ छात्रों को समूह में बांटकर उनसे निबंध लिखने के लिए कहा गया। इसमें एक ग्रुप को चैटजीपीटी की मदद लेने, दूसरे को पारंपरिक गूगल सर्च और तीसरे ग्रुप को केवल अपने दिमाग का प्रयोग कर असाइनमेंट पूरा करने के लिए कहा गया। मस्तिष्क में इलेक्ट्रिकल एक्टिविटी को मापने के लिए छात्रों को सेंसर लगाया गया। चैटजीपीटी यूजर्स के दिमाग में सबसे कम एक्टिविटी देखी गई, क्योंकि उनका काम एआइ कर रहा था। इसे पूरा करने के बाद जब निबंध के एक हिस्से के बारे में पूछा गया, तो 83 प्रतिशत चैटजीपीटी यूजर्स एक वाक्य भी याद भी नहीं कर पाए। वहीं, गूगल सर्च वाले कुछ बातों को याद रख पाए थे, जबकि बिना तकनीक की मदद लिए निबंध लिखने वाले छात्र लगभग सब कुछ बताने में सफल रहे।

फोटो फ्रीपिक

इंटरनेट मीडिया का प्रभाव

कई सारे अध्ययनों से स्पष्ट है कि इंटरनेट मीडिया का प्रयोग करने वाले अधिकांश छात्रों का क्लासरूम में प्रदर्शन अपेक्षाकृत कमजोर रहता है। यही कारण है कि आस्ट्रेलिया आदि कई देशों में बच्चों-किशोरों के स्मार्टफोन के प्रयोग को लेकर प्रतिबंध लगाया जा रहा है। मेडिकल जर्नल 'जामा' के अनुसार, जो बच्चे इंटरनेट मीडिया कम (दिन में एक घंटा) उपयोग करते हैं, उनकी तुलना में अधिक उपयोग (कम से कम तीन घंटा) करने वाले बच्चे पढ़ाई, याददाश्त और शब्दावली परीक्षण में कमजोर होते हैं। स्क्राल करते रहने की आदत बच्चों की न केवल पढ़ाई, बल्कि उनकी नींद को भी प्रभावित करती है। एआइ के दौर में सवाल यह है कि स्क्रीन पर क्या है, इससे अधिक यह देखने की जरूरत है कि बच्चे इसे लेकर सोचते कैसे हैं, यानी अगर इंटरनेट मीडिया ने परस्पर जुड़ाव के तरीके को बदला है, तो एआइ सोचने के ढंग को बदल रहा है। लोग हर जानकारी के लिए खोजबीन करने या उस पर विचार करने के बजाय सीधे एआइ से पूछने लगे हैं। स्वतः निर्णय करने के बजाय वे एल्गोरिदम की प्रतिक्रिया पर अधिक भरोसा करने लगे हैं। साल 2024 के प्यू सर्वे का निष्कर्ष है कि 58 प्रतिशत किशोर स्कूलवर्क के लिए एआइ टूल्स का प्रयोग कर रहे हैं।

एआइ टूल्स पर निर्भरता क्यों जोखिम भरी

बच्चों के सोच में हो रहा यह बदलाव अदृश्य और आंतरिक है, इसलिए चुनौती बहुत बड़ी है। जिस तरह हाथ से लिखने या कोई वाद्ययंत्र बजाने के लिए बच्चे धीरे-धीरे अभ्यास करते रहे हैं, एआइ के उपयोग भी कुछ इसी तरह करने की जरूरत है, न कि उसके रेडीमेड जवाब पर निर्भर रहने की। हमें बताया जाता है कि जो लोग नई तकनीक की अनदेखी करते हैं, वे पीछे रह जाते हैं। लेकिन सर्वे बताते हैं कि शोध और लेखन जैसे कार्यों में एआइ के प्रयोग से मौलिकता खोने का डर है।

किस तरह प्रभावित होती है याददाश्त

एकाग्रता में कमी : चूंकि आनलाइन कंटेंट छोटे, त्वरित होते हैं, लगातार इसके प्रभाव में रहने से जटिल कार्यों के दौरान खुद को केंद्रित रख पाना मुश्किल हो जाता है।

मानसिक थकान : अनावश्यक कंटेंट पर लगातार नजर रखने के लिए आप मानसिक रूप से थका हुआ महसूस करने लगते हैं।

याददाश्त में कमी : लगातार डिजिटल डिस्ट्रक्शन के चलते किसी बात को आप लंबे समय तक याद रखने में मुश्किल महसूस करने लगते हैं।

चिंता या तनाव में वृद्धि : नकारात्मक खबरों, डूमस्क्रालिंग के चलते तनाव बढ़ सकता है।

कैसे बचें आनलाइन दुष्प्रभावों से

कंटेंट को क्यूरेट करें : आप उन अकाउंट और प्लेटफार्म को फालो करें जो सार्थक, शैक्षणिक और प्रेरणादायक कंटेंट प्रदान करते हों। क्लिकबेट के लिए साझा किए जाने वाले कंटेंट से बचें।

इंटरनेट मीडिया से ब्रेक लें : स्क्रीन टाइम से कुछ समय के लिए दूरी बना लें। इससे डिजिटल थकान से राहत मिलेगी और एकाग्रता बढ़ेगी।

स्क्रीन के लिए लिमिट तय करें : स्क्रीन के लिए आप सीमा तय कर सकते हैं, खासकर इंटरनेट मीडिया स्क्रालिंग के लिए।

सतर्कता बढ़ाने की जरूरत

डा. एकांश शर्मा
साइकियाट्रिस्ट

इंटरनेट मीडिया और एआइ उपयोगी और नुकसानदेह दोनों हो सकते हैं, यह आपके प्रयोग के तरीके पर निर्भर है। इंटरनेट मीडिया कनेक्शन, कम्युनिटी और क्रिएटिविटी को बढ़ाता है। लेकिन तुलना करने, डूमस्क्रालिंग व साइबरबुलिंग के चलते इससे चिंता, अवसाद, नींद में व्यवधान जैसी समस्याएं हो सकती हैं। एआइ व्यक्तिगत सपोर्ट, थेरेपी टूल दे सकता है, पर अफवाहों, डीपफेक व हीनता का भाव पैदा कर सकता है।

क्या हैं उपाय :

सीमा तय करें : प्रतिदिन 30 से 60 मिनट ही दें। बिस्तर पर फोन और नोटिफिकेशन से दूर रहें।

फीड को क्यूरेट करें : ऐसे लोगों को फालो करें जो आपको सकारात्मकता की तरफ ले जाएं। तुलना और निराशा से बचें।

शरीर व नींद को बचाएं: सात से नौ घंटे की नींद, बिना स्क्रीन के भोजन करने की आदत डालें।

एआइ का प्रयोग : साक्ष्य आधारित मेंटल हेल्थ एप, मूड ट्रैकिंग, सीबीटी एक्सरसाइज कभी वास्तविक देखभाल का विकल्प नहीं बन सकते।

मीडिया साक्षरता समझें : तथ्यों और स्रोत को जांचें। सनसनीखेज कंटेंट से सतर्क रहें।

असली संबंधों को बहाल करें: वीकली फोनकाल, साथ में भोजन करने, स्वयंसेवा में शामिल हों। यदि आप लगातार उदास, चिंतित या असुरक्षित महसूस कर रहे हैं, तो डाक्टर से संपर्क करें।